आयुर्वेदिक फार्मेसी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष का

प्रथम प्रश्न-पत्र (1)

01 - आयुर्वेद परिचय एवं स्वस्थवृत्त

आयुर्वेद परिचय--

1—आयुर्वेद शब्द की निरुपित ।
2—आयुर्वेद की परिभाषा ।
3—सुखादि आयु का लक्षण ।
4—हिताायु और अहिताायु ।
5—आयु का मान ।
6—आरोग्य और अनारोग्य ।
7—आयुर्वेद का शाश्वतत्व ।
8—पुरुषार्थ चतुष्टय ।
9—चतुर्विध पुरुषार्थ साधन के रूप में आरोग्य का प्रतिपादन ।
10—आयुर्वेद का प्रयोजन ।
11—आयुर्वेद का अधिष्ठान ।
12--लोक सम्मत पुरुष ।

13—आयुर्वेदावतरण ।

14—आयुर्वेद के आठ अंग ।

15—चिकित्सा के चतुष्पाद और उसमें वैद्य का प्राधान्य ।

16—तीन एषणाएं ।

17—वैद्यकीय आचार संहिता ।

18—भिषक् लक्षण ।

19—प्राणाभिसर वैद्य के लक्षण ।

20—रोगाभिसर वैद्य के लक्षण ।

21—वैद्य का त्रिविधत्व ।

22—भिषक् के गुण ।

23—उभयज्ञ वैद्य की श्रेष्ठता ।

24—दोष धातु—मल का सामान्य परिचय ।

स्वास्थ्य विज्ञान—

(क) व्यक्तिगत स्वास्थ्य—आरोग्य की व्याख्या, आरोग्य तथा रोग के लक्षण, स्वस्थ पुरुष के लक्षण, नित्य ब्रह्ममुहूर्त में उठने के लाभ, शौच–विधि, दन्तशोधन, नेत्र–रक्षा, अभ्यंग, स्नान, व्यायाम, वस्त्र परिधान, दिनचर्या, ऋतुचर्या, रात्रिचर्या, ऋतुदोष–संबंध निद्रावेग–विधारण, प्रज्ञापराध ।

(ख) सार्वजनिक स्वास्थ्य—गृह निर्माण, गृह के भिन्न-भिन्न विभागों की व्यवस्था, किराये के गृह, वायु संचालन, नागरिक स्वच्छता, जलाशयों का प्रबंध, विद्यालयों एवं सार्वजनिक स्थानों तथा व्यावसायिक स्थानों का स्वास्थ्य ।

(ग) आहार संगठन, आहार विधि, आहार काल, आहार और रोग, भोजन के नियम, भोजन के पश्चात् कर्म, विरुद्धाहार ।

(घ) ब्रह्मचर्य की व्याख्या, ब्रह्मचर्य के फल, वीर्यनाश का फल, बाल विवाह के दोष, मद्यसेवन के दोष, चरकोक्त सद्वृत्त का ज्ञान, रोगोत्पादक भावों का ज्ञान, आचार रसायन, उपवास व्याख्या एवं उसका फल, दूषित जल शोधन–रीति, वायु शुद्धि ।

(ङ) जनपदोद्ध्वंस—देश के भेद तथा जनपदोद्ध्वंस के कारण, वायु विकृति, जल विकृति, देश विकृति, कालविकृति, संक्रामक रोगों की रुकावट, संक्रामक रोगों से रक्षा के उपाय, पृथक्करण की व्यवस्था, विभिन्न संक्रामक रोगों का प्रसार एवं प्रतिषेध, संक्रमण, व्याधियों, मैथुनजन्य फिरंग, उपदंश, कुष्ठ आदि दूषित जल एवं वायु जन्य व्याधियों एवं उनका प्रसार करने वाले कीटाणु ।

(च) जनसंख्या की समस्यायें—फार्मेसिस्ट का परिवार, कल्याण प्रोग्राम में स्थान, जन समाज को परिवार कल्याण के प्रति शिक्षित करना तथा चिकित्सालय, औषधालय, फार्मेसी और अन्य संस्थाओं में इसे सफल बनाना ।

(छ) परिवार कल्याण के विभिन्न सिद्धान्त, विभिन्न रासायनिक द्रव्य, मुख द्वारा प्रयुक्त औषधि द्रव्य एवं अन्य गर्भ निरोधक उपाय ।

(ज) गर्भ निरोधक द्रव्यों के प्रयोग के सिद्धान्त, संरक्षण, प्रकार एवं उनके परीक्षण के तरीके ।

आलोच्य ग्रन्थ—

1—स्वास्थ्य संहिता—श्री नानक चन्द्र ।

2—आरोग्य विधान—स्व0 जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ।

3—आयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास—श्री प्रिय व्रत शर्मा ।

4—स्वस्थवृत्त समुच्चय—श्री राजेश्वर दत्त शास्त्री ।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

2- शरीर रचना एवं क्रिया-विज्ञान

1—शरीर शब्द की व्युत्पत्ति, व्याख्या, पर्याय और षडंगत्व ।

2—शरीर का विभाग, अंग प्रत्यंग, कोष्ठ आदि ।

3—उत्तक एवं कोशिका ।

4—शरीर की क्रिया इकाई के रूप में ।

5—कंकाल एवं अस्थि संस्थान ।

6—संधि संस्थान ।

7—मांसपेशी संस्थान ।

8—रक्तवह संस्थान ।

9—रक्त एवं लसिका ।

10—पाचन संस्था आहार एवं पोषण ।

11—त्वक् एवं कला ।

12—श्वासोच्छ्वास संस्थान ।

13—मूत्रवह संस्थान ।

14—निःस्रोत ग्रंथियां ।

15—नाड़ी संस्थान एवं मस्तिष्क ।

16—ज्ञानेन्द्रियां ।

17—प्रजनन संस्थान ।

18—गर्भ शारीर, गर्भ उत्पत्ति, पोषण एवं विकास ।

19—दोष, धातुमल विवेचन ।

क्रियात्मक—

1—सूक्ष्म दर्शक यंत्र की क्रिया विधि ।

2—शरीर रचना एवं शरीर क्रिया के सैद्धान्तिक पक्ष को प्रदर्शित करने वाले चित्र, माडल तथा स्लाइड का परिचय एवं ज्ञान ।

3—रक्त कणों का परिगणन, मूत्र का गुणात्मक परीक्षण, मल परीक्षण ।

सूचना—शरीर रचना एवं शरीर क्रिया का अध्ययन इस प्रकार समन्वयात्मक रूप से कराया जाय, जिससे छात्र अंग–प्रत्यंग की रचना एवं क्रिया को भली भांति हृदयंगम कर सके ।

आलोच्य ग्रन्थ—

1—मानव शरीर रहस्य (खण्ड 1–2) ।
2—संक्षिप्त शरीर परिचय—श्री जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल ।
3—एनाटमी—फिजियालाजी फार नर्सेज, सियर्स डब्ल्यू0 गार्डेन ।
4—मानव शरीर रचना विज्ञान—डा0 मुकुन्द स्वरूप वर्मा ।
5—क्रिया शारीर—श्री रणजीत राय देसाई ।

तृतीय प्रश्न–पत्र

03 – द्रव्यगुण एवं द्रव्य परिचय

1—द्रव्य की परिभाषायें एवं उसके प्रकार, द्रव्यान्तर्गतरस, गुण, वीर्य, विपाक एवं प्रभाव का ज्ञान, रस–दोष संबंध ।

2—द्रव्यगुण परिभाषा—अनुलोमन, पाचन, दीपन, भेदन, ग्राही, मदकारी, वामक, विरेचक, बाजीकरण, विषघ्न, विष्टंभी, वृष्य, रसायन, स्तम्भन, स्नेहन, रूक्षण आदि की परिभाषा ।

3—निम्न वर्गों एवं गुणों के द्रव्यों का परिचयात्मक ज्ञान—विविध पंचमूल, पंचवल्कल, क्षीरवृक्ष, पंचपल्लव, त्रिफला, त्रिकटु, त्रिमद, चतुरुषण, षडूषण, चतुर्बीज, जीवनीय गण, अष्टवर्ग, त्रिजात, पंचतिक्त, अम्लपंचक, महाविष, उपविष आदि ।

4—निम्न द्रव्यों का विशेष ज्ञान—

(क) औषधियां—हरीतकी, विभीतक, आमलकी, शुंठी, मरिच, पिप्पली, चव्य, चित्रक, अजवाइन, अजमोदा, सफेद जीरा, स्याह जीरा, सौंफ, मेथी, वायविडंग, वंशलोचन, मुलेठी, अमलतास, कुटकी, चिरायता, मैनफल, मकोय, फूट, कर्कटश्रृंगी, कायफल केवांच, असगंध, शतावरी, मुण्डी, अपामार्ग, गुडूची, निम्ब, घृत, कुमारी, पुनर्नवा, भृंगराज, अडूसा, अर्क, काकजंघा, शंखपुष्पी, ब्राह्मी, आकाश बल्ली, बबूल, रोहिष, द्रोणपुष्पी, छिकनी, गोजिह्वा, दूधिया, सेमर, सहजन, विधारा, अर्जुन, खैर, रोहितक, रीठा, जियामोता ।

(ख) क्षार वर्ग—सेंधा नमक, सोचर नमक, विड् नमक, समुद्री नमक, सांभर नमक, पापड़, खार, सज्जीक्षार, जवाखार, अपामर्गक्षार, तिलक्षार, अडूसा क्षार, कंटकारी क्षार, शरपुंखा क्षार, नवसादर, कलमी शोरा, सुहागा, फिटकरी, रेह, आदि का परिचय, निर्माण व शोधन विधि, गुण–दोष प्रयोग व मात्रा का ज्ञान ।

(ग) सुगन्ध वर्ग—कपूर, कस्तूरी, केशर, खस, नागकेशर, लताकस्तूरी, पतंग, पद्मख, लालचन्दन, अगर, तगर, हल्दी, दारू हल्दी, देवदार, शिलाजीत, छरीला, राल्धूप, लौंग, छोटी इलायची, बड़ी इलायची, तेजपात, दालचीनी, गोरोचन, लौंग, सुगन्धकला, कबूर, तालीसपत्र, कपूरकचरी, पोदीना पान, तुलसीबन तुलसी, पुदीना तथा मरूवक ।

(घ) क्षीरी वर्ग—गूलर, पीपल, बरगद, पाकर, पलाश, सेहुंड, नागफनी, अंजीर, महुआ तथा सीहौर ।

(ङ) विषोपविष वर्ग—कलिहारी, कनेर, सींगिया, कुचला, अहिफेन, धतूरा, गुंजा (सफेद और लाल), भांग, गांजा, संखिया ।

(च) पुष्प वर्ग—पलाश, नीम, बकायन, कचनार, अपराजिता, गुलाब, चमेली, मौलसिरी, कमल, कुमुदनी, कदम्ब, मुचकुन्द, अगस्त्य, गुड़हल, सूर्यमुखी, मधूक, धातकी. लवंग, गुलखैर आदि ।

(छ) फल वर्ग—आम–जामुन, अमरूद, कटहल, लसोड़ा, केला, अनार, नारियल, कुष्मांड, ककड़ी, खीरा, खरबूजा, ताड, खजूर, बेल, कपित्थ, नीबू, जम्बीरी, नीबू, संतरा, मुसम्मी, अंगूर, सेव, नासपाती, फालसा, शहतूत, टमाटर, छुआरा, खिरनी, चिरौंजी, सिंघाड़ा, इमली, करौंदा, कमरख तथा बड़हर ।

(ज) धान्यवर्ग—चावल, फसही चावल, कोदों, सावां, काकून, गेहूं, जौ, उड़द, मटर, कुलथी, मूंग, चना, सोयाबीन आदि ।

(झ) तेल वर्ग—तिल, सरसों, राई, एरन्ड, अलसी, बादाम, शीतल चीनी, कुसुम, मूंगफली, महुआ, बेला, गुलरोगन, पोस्ता, काहू, लौंग, दालचीनी, तारपीन, जैतून, इलायची आदि का तेल ।

(ञ) शाक वर्ग---चौलाई, बथुआ, पालक, सरसों, मूली, गवार, सैम, परवल, आलू, फूलगोभी, बन्द गोभी, कच्चा कुलफा, ब्राह्मी, चचींडा, तरोई, लौकी, चेंच, करेला, कुन्दरु, शकरकन्द, अरुई, रतालू, गाजर, बन्डा, केवाच, मेथी, सोया और करेमुआ ।

(त) जलवर्ग---गंगाजल, वृष्टिजल, सागरजल, नदीजल, तडाग जल, चौड्यजल, दूषितजल, उष्णजल, हंसोदक, क्वथित जल, बासी जल तथा जलशोधन विधि ।

(थ) दूध के सामान्य गुण---गाय, भैंस, बकरी, भेंड, ऊंटनी, गदही, हथनी और स्त्री दुग्ध के गुण । इनके दही व घी का गुण, धारोष्ठा दुग्ध, कच्चा दूध तथा पके दूध के गुण और क्षीरपाक ।

(द) मधुर वर्ग---मधु, गन्ने का रस, गुड़, खांड, चीनी, राव, शीरा, मिश्री, खजूर और ताड मिश्री ।

(ध) संधान वर्ग---सिरका, कांजी, आसव, अरिष्ट, मद्य, सुरा, मुरब्बा, रायता आदि के गुण।

(न) प्राणिज वर्ग---कस्तूरी, गोरोचन, शंख, शुक्ति, मुक्ता, कपर्द, प्रवाल, समुद्रफेन, अस्थि, मकड़ी का जाला, शेर की चरबी, शूकर की चर्बी, कबूतर की बीट, केचुआ, गधे की लीद, गोमूत्र अजामूत्र, औविक मूत्र, खरमूत्र, नरमूत्र, हस्तिनी मूत्र, गोबर, वीरबहूटी, मोरपंख, मोम, सांप की केंचुली, हरिणश्रृंग, हस्ति दन्त आदि ।

5---पाश्चात्य चिकित्सा में प्रयुक्त होने वाली निम्नलिखित औषधियों का परिज्ञान---

1---बोरिक एसिड
2---जिंक आक्साइड
3---सोडा बाइकार्ब
4---मरक्योरीक्रोम
5---एक्रीफ्लेविन
6---वेसलीन (पीत)
7---पोटेशियम परमैगनट
8---इसेंन्शियल आयल
9---आयल औलिव
10---कैस्टर आयल
11---ऐस्प्रीन
12---स्प्रिट मेथेलेटेड
13---टिंचर बेन्जोइन
14---टिंचर आयोडीन
15---क्विनीन सल्फ
16---एन्टी फ्लोजिस्टीन
17---ऐन्टीसेप्टिक्स
18---क्लोरोफार्म एवं अन्य संज्ञाहार द्रव्य
19---सल्फा ड्रग्स एवं एन्टीबायोटिक्स

6---द्रव्य परिचय (फार्माकोग्नोसी) का अर्थ, विषय, विस्तार एवं महत्व, द्रव्य परिचय की सामान्य विधियों का ज्ञान।

क्रियात्मक---(1) उपरोक्त द्रव्यों के रस, गुण, वीर्य, विपाक, प्रभाव एवं परिचयात्मक विशेषताओं का परिज्ञान कराना जिससे इन द्रव्यों को पहचाना जा सके ।

(2) कम से कम पांच प्रचलित द्रव्यों की स्थूल एवं सूक्ष्म संरचना का प्रत्यक्ष ज्ञान ।

(3) कम से कम 25 प्रचलित द्रव्यों का संग्रह ।

आलोच्य ग्रन्थ---

(1) भाव प्रकाश निघन्टु
(2) द्रव्य गुण विज्ञान---यादव जी कृत
(3) क्रियात्मक औषधि परिचय विज्ञान---श्री विश्वनाथ जी द्विवेदी ।

आयुर्वेदिक फार्मासिस्ट प्रशिक्षण पाठ्यक्रम अन्तिम वर्ष का प्रथम

चतुर्थ प्रश्न-पत्र

रसशास्त्र एवम् भैषज्य-कल्पना

रसशास्त्र---

1---रस---रस शब्द की निरुक्ति रस के पर्याय, प्राप्ति स्थान, योगिकों का स्वरूप, नैसर्गिक और कंचुकारव्य दोष, ग्राह्याग्राह्य स्वरूप शोधन, अष्ट संस्कार, गति और बंध । कज्जली, रस पर्पटी, स्वर्ण पर्पटी, ताम्र पर्पटी, विजय पर्पटी, पंचामृत पर्पटी, रस पुष्प, रस कर्पूर, रस सिंदूर, मकरध्वज, सिद्ध मकरध्वज, इनकी निर्माणविधि, मात्रा, गुण और आभ्यान्तरिक प्रयोग का समुचित ज्ञान। हिंगुलोत्थ रस का सम्यक् ज्ञान ।

(अ) आयुर्वेद में वर्णित विभिन्न अकार्बनिक द्रव्यों का प्रारंभिक अध्ययन, विशेषता, उनके योग, शुद्धता, परीक्षण एवं मानक।

(ब) रसशास्त्र में वर्णित कार्बनिक द्रव्यों का प्रारंभिक अध्ययन, विशेषतः उनकी पहिचान, शुद्धता परीक्षण एवं मानक।

2---महारस आदि---

(i) महारस, उपरस, साधारण रस के अन्तर्गत परिगणित द्रव्यों का स्वरूप, प्राप्ति स्थान, भेद, शोधन, मारण, सत्वपातन गुण, कर्म और मात्रा का ज्ञान।

(ii) स्वर्ण बंग, रसमाणिक्य, श्वेत पर्पटी आदि की निर्माण विधि, गुण और मात्रा का ज्ञान।

3---धातु और उपधातु---

स्वर्ण, रजत, ताम्र, लौह, नाग, बंग, यशद, पूर्ति लौह तथा कांस्य, पीतल आदि मिश्र लौह के प्राप्ति स्थान, स्वरूप, भेद, शोधन, मारण, अमृतीकरण, गुण और मात्रा का ज्ञान।

4---रत्नोपरत्न आदि---

माणिक्य, मुक्ता, प्रवाल, तार्क्ष्य, पुष्पराग, वज्र, नीलम, गोमेद, वैडूर्य आदि रत्नों, वैकान्त, सूर्यकान्त, राजावर्त, पैरोज, स्फटिक, व्योमाश्म, पालक रुधिर, पुत्तिका सुगंधित तुष्कान्त आदि उपरत्नों, शुक्ति शंख, वराटिका, दुग्ध पाषाण, गोदन्ती, मृगश्रृंग, कोषयाश्म, वदरश्मि तथा सुधा वर्ग के अन्तर्गत आये हुए द्रव्यों का परिचय, प्राप्ति स्थान, स्वरूप, शोधन, मारण, पिष्टीकरण, गुण और मात्रा का ज्ञान।

भेषज्य कल्पना---

1---निम्नांकित औषधकल्पों का परिचय, परिभाषा, निर्माण विधि, मात्रा, आमयिक प्रयोग, अनुपान आदि का विस्तृत ज्ञान-

स्वरस, कल्क, क्वाथ, फण्ट, हिम, षडंगपानीय, उष्णोदक, तण्डुलोदक, लाक्षारस, मांस रस, मंथ, औषधिसिद्धपानीय, औषधियूष, अर्क, पानक, शार्कर, प्रभथ्या, रसक्रिया, फाणित, अवलेह, घनसत्व, गुडपाक, चूर्ण वटिका, गुटिका, वटक, पिण्ड, गुग्गुलुकल्पक, लवणकल्प, मसिकल्प, अयस्कृति, क्षारसूत्र निर्माण तथा अन्य प्रचलित कल्प।

2---स्नेह कल्पना में द्रव, कल्क, क्वाथ, स्नेह, दधि और क्षीर आदि के ग्रहण का नियम, स्नेह पाक का क्रम, काल और प्रकार। विभिन्न स्नेहों की मूर्च्छना, स्नेहसिद्धि के लक्षण, कतिपय घृत और तैल के योग।

3---संधान कल्पना में आसव, अरिष्ट, सुरा, सीधु, वारुणी, प्रसन्ना, कादम्बरी, भेदक, मैरेय, जगल, सुरासव, मद्य, अलकोहल आदि मद्यवर्गीय कल्पों, शुक्त, आरनाल, कांजिक, धान्याल तुषोदक प्रभृति शुक्तवर्गीय कल्पों के निर्माण आदि का ज्ञान।

4---पथ्य कल्पना में मण्ड, पेया, यवागू विलेपी, कृशरा, अन्न भक्त, यूषरस, खण्ड, राग, षाडव, केशवार, तक्र, उदश्वित्, मथित, कदर, दधि, कूचिका आदि कल्पकों का निर्माण ज्ञान।

5---बाह्य प्रयोग कल्पों में विधि लेप प्रकार, उनका निर्माण व प्रयोग विधि, शत धोल, ब्रह्मधौतघृत, मलहर, उपनाह सिक्थ तैल को निर्माण विधि।

6---निम्न विधियों का सम्यक् ज्ञान---(क) विलयन (लोशन)---विभिन्न औषधियों के विलयन का निर्माण।

(ख) वर्तिका (सपोजिटरीज)---विशेष औषधियों की वर्तिकाओं का निर्माण।

(ग) लेप---लेप के भेद तथा निर्माण विधि, प्रलेप (प्लास्टर) की निर्माण विधि, पेरिस प्रलेप की निर्माण एवं काटने की विधि, उपनाह की प्रयोग विधि।

7---अनुपान---परिभाषा, अनुपान विधि एवं मात्रा, साबूदाना, जौ का पानी, अलसी की चाय, तुलसी व अदरख की चाय, शिकंजवीन, चूने का पानी, चावल का मांड़ आदि का निर्माण।

8---रस, रसायन एवं सिद्ध योग---मृत्युंजय, सर्वज्वर हर लौह, संजीवनी, त्रिभुवनकीर्ति, आनंद भैरव, प्रतापलंकेश्वर, रामबाण, नवायस लौह, पुनर्नवा मंडूर, सप्तामृत लौह, कर्पूर रस, इच्छा भेदी, जलोदरारि, श्वासकुठार, लक्ष्मी विलास, बृहतवात चिन्तामणि, कस्तूरी भैरव व बसंतमालती, वसंत कुसुमाकर, सूतशेखर हृदयार्णव, गर्भपाल, कुमार कल्याण, राजमृगांक---इनकी मात्राओं एवं आमयिक प्रयोग का ज्ञान।

9---औषधि मिश्रण पद्धति---औषधदान व्यवस्था, सांकेतिक चिन्हों का ज्ञान, व्यवस्था पत्र लिखने का ढंग, औषधियों को अलमारी आदि में स्वच्छतापूर्वक व्यवस्थित ढंग से रखने का ज्ञान, उन्हें पहचानने की विधि विषौषधि रखने की स्वतंत्र व्यवस्था।

10---औषधि---संग्रह रजिस्टर की पूर्ति एवं संरक्षण, चिकित्सालय में प्रयुक्त होने वाली औषधियों की सूची (इन्डेण्ट) का निर्माण, स्थानीय औषधियों की संग्रह, संरक्षण आदि विधि।

क्रियात्मक---

1---रस द्रव्यों का संग्रह एवं प्रत्यक्ष दर्शन।
2---रसशास्त्र में प्रयुक्त शोधन, मारण, सत्वपातन आदि का प्रदर्शन।
3---रसशास्त्र में वर्णित विविध मान, वर्तमान ज्ञान।
4---अकार्बनिक द्रव्यों की पहचान तथा शुद्धता परीक्षण।
5---आर्सेनिक, लेड, क्लोरीन, आइरन, पारद आदि की उपस्थिति ज्ञात करने हेतु परीक्षण।
6---स्वरस, कल्क, फाँट, हिम, बंडगपानीय आदि एवं विभिन्न अनुपानों एवं पथ्यों का निर्माण।

आलोच्य ग्रंथ---

1---प्रत्यक्षौषधि निर्माण--पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी।
2---द्रव्यगुण विज्ञान (परिभाषा खण्ड)---यादव जी कृत।
3---भैषज्य कल्पना विज्ञान---श्री अग्निहोत्री।

4—शारंगधर संहिता (उपयोगी अंश)।

5—आसवारिष्ट विज्ञान।

6—परिभाषा प्रदीप।

7—भाव प्रकाश (प्रकरण 7)।

8—रसतरंगिणी।

9—रसामृतम।

द्वितीय प्रश्न-पत्र

रुग्ण परिचर्या एवं व्यवहार आयुर्वेद

रुग्ण परिचर्या—

1—परिचारक के गुण और कर्त्तव्य, परिचारक का व्यवहार, परिचारक का परिधान, परिचारक का वैद्य, रोगी तथा रोगी के कुटुम्बियों के प्रति कर्त्तव्य।

2—रुग्णालय तथा उसमें प्रयुक्त होने वाली प्रत्येक वस्तु का शोधन, संक्रमण का प्रतिकार।

3—रुग्णालय में नवीन रोगियों के भर्ती के नियम, रोगियों से भेंट करने के लिये दर्शकों के रुग्ण कक्ष में प्रवेश करने के नियम।

4—रोगी के शरीर की सफाई, निस्सहाय रोगियों को शैय्या में ही स्नान तथा प्रक्षालन, मलपात्र एवं मूत्रपात्र का प्रयोग, रोगी के आराम तथा निद्रा की व्यवस्था।

5—शैय्या का तैयार करना, विभिन्न प्रकार की शैय्यायें।

6—शैय्या व्रण, शैय्या व्रण के कारण, उनका प्रतिरोध तथा प्रतिकार।

7—रोगी की माप-तौल, रोगी के शरीर का ताप लेना तथा नाड़ी व श्वांस क्रिया की सामान्य परीक्षा करना।

8—इंजेक्शन, इनाकुलेशन, वैक्सीनेशन आदि के सिद्धान्त, बर्फ की थैली, दस्ताना, मैकिटाश, स्फिग्मोमैनोमीटर, बेड क्रेडिल, एयरकुशन, रबररिंग, फाउमिक टेबिल, सेंक के विभिन्न उपकरण, रोगी शैय्या सम्बन्धी उपकरणों का ज्ञान, संक्रामक रोगों की विशिष्ट परिचर्या एवं परिचारक के लिये सावधानियां।

9—रोगी विवरण पत्र की पूर्ति, रोगी के विषय में रिपोर्ट लिखना, शरीर के ताप, श्वांसक्रिया, मलमूत्र, कफ वमन, त्वचा तथा मानसिक अवस्थायें, चेष्टायें आदि का निरीक्षण करके रिपोर्ट बनाना।

10—मल-मूत्र तथा थूक को परीक्षा के लिये भेजने की विधि।

11—नासिका आदि अन्य मार्गों से रोगी को पोषण देना।

12—वस्ति एवं उत्तरवस्ति विधान, मूत्राशय, मलाशय आदि समस्त मल मार्गों का शोधन, डूस तथा कैथीटर का प्रयोग।

13—वाष्प स्नान, स्वेदन क्रियायें, उपनाह और सेंक, गरम पानी की बोतल।

14—शरीर का तापक्रम कम करने के लिये शीतोपचार, हिम पुटिका (आइसकैप), हिम पुटक (आइस बैग) तथा हिम प्रलेप (आइस पुल्टिस) का प्रयोग।

15—औषधि प्रयोग, वाह्य प्रयोग, मुख द्वारा प्रयोग, श्वांस द्वारा प्रयोग, गुदा द्वारा प्रयोग, औषधि संरक्षण विधि, औषधि का निरीक्षण।

16—शोथनाशक प्रयोग, पुल्टिस, शुष्कस्वेद, वाष्प स्वेद, गिलास लगाना (कपिंग), अभ्यंग आदि।

17—अभ्यंग—मालिश करने की विधियां, शल्य रोगियों की मालिश द्वारा चिकित्सा तथा शोथ, अस्थि भग्न, संधि विश्लेष आदि में एवं अन्य रुग्णावस्थाओं में मर्दन तथा व्यायाम आदि द्वारा चिकित्सा।

18—अनुपान तथा पथ्यापथ्य विधान—साबूदाना, जौ का पानी, अलसी की चाय, तुलसी व अदरख की चाय, शिकंजबीन, दालयूष, चूने का पानी, चावल का माड़ आदि की प्रयोग विधि। रोगी पात्र, रोगी के भोजन की देखभाल।

19—रोग भेद से परिचर्या—भेद का विवरण।

20—रोगी की मृत्यु होने की सम्भावना में परिचारक के कर्त्तव्य। मृत्युत्तर शव प्रबन्ध।

व्यवहार आयुर्वेद—

1—स्थावर एवं जांगम विषों का सामान्य ज्ञान।

2—विभिन्न विषैली (Poisonous and Dangerous Drugs) औषधियों से सम्बन्धित अधिनियमों का ज्ञान।

प्राथमिक उपचार—

आकस्मिक अभिघात और उनका उपचार, अभिघातक व्रणों के प्राथमिक चिकित्सा, कुचल जाने और कुचले स्थान के नीला पड़ जाने के कारण रक्तश्रुति रोकने के उपाय, अग्निदग्ध, सूर्य रश्मिदग्ध, बर्फ से गले, शीत से ठिठुर जाने, मूछित होने या मस्तिष्क में गर्मी चढ़ जाने, पानी में डूबने, दम घुटने आदि में श्वास को परिचालित करने हेतु कृत्रिम श्वास विधि, अस्थिभंग, संधि भंग, मोच आदि का प्राथमिक उपचार और आहत वाहिका (स्ट्रैचर) में रखकर आहत रोगी को चिकित्सा-गृह तक ले जाने की पद्धति का ज्ञान, आकस्मिक घटना सम्बन्धी वस्तुओं की तैयारी का ज्ञान। शरीर के विभिन्न भागों के लिए मुख्य-पट्टियां।

णितोपासक के कर्त्तव्य—

(क) शुद्ध और निर्जन्तुक शस्त्र क्रिया के सिद्धान्त, जीवाणुओं का वर्गीकरण, शरीर में रोगोत्पादक जीवाणुओं का प्रवेश, जीवाणुओं को नष्ट करने की विधि, उबालना, वायु दबाव, विशुद्धिकरण, निर्जन्तुकरण आदि प्रक्रियाओं का सम्यक् ज्ञान।

(ख) पूर्व कर्म :—

(1) शल्य भवन की व्यवस्था तथा देखरेख, शल्य सम्बन्धी पूर्व कर्म।
(2) आतुरालय के उपकरण, उनके नाम और प्रयोग।
(3) शल्य कर्म सम्बन्धी यंत्र, शस्त्रों के निर्जन्तुकरण एवं सुरक्षित रखने की विधि।
(4) क्रियात्मक शल्य चिकित्सा के पूर्व सामान्य क्रियायें, हाथ और बांह का निर्जन्तुकरण, नखकुंचिका का निर्जन्तुकरण, दस्ताने, यंत्र–शस्त्र, बंधन, सूचिका का निर्जन्तुकरण या शुद्धिकरण।
(5) शस्त्रकर्म के लिए रोगी की तैयारी, रोगी की त्वक् शुद्धि।

(ग) पट्टियां (बैण्डेज)—शरीर के विशेष भागों के लिए मुख्य पट्टियों, क्षत और सामान्य अभिघातों की बंध क्रिया (ड्रेसिंग)।

(घ) संज्ञाहार द्रव्यों का सामान्य ज्ञान एवं प्रयोग ज्ञान, प्रयुक्त होने वाली संज्ञाहार औषधियां, संज्ञानाश की अवस्थाएं, संज्ञानाश सम्बन्धी सावधानियां, संज्ञानाश के पश्चात् रोगी की देखरेख, क्लोरोफार्म और ईथर की प्रयोग विधि।

व्यावसायिक विज्ञान—

(1) कम्पाउन्डर के कर्त्तव्य एवं व्यवसाय में उत्तरदायित्व, चिकित्सक, रोगी, नर्स एवं जनसाधारण से उसके सम्बन्ध एवं कर्त्तव्य।
(2) औषधियों एवं चिकित्सा व्यवसाय के सम्बन्ध में राजकीय नियमोपनियमों का विशिष्ट ज्ञान।
(3) व्यवहारायुर्वेद सम्बन्धी कार्यों में कम्पाउन्डरों का उत्तरदायित्व।
(4) परिवार नियोजन सम्बन्धी प्रमुख विधियों का परिचय एवं कम्पाउन्डर का उसमें योगदान।
(5) व्यवस्था पत्र प्राप्त करने, तदनुसार योग तैयार करने एवं वितरण करने सम्बन्धी नियम।
(6) चिकित्सालय, निर्माणशाला आदि के विभिन्न विभागों की कार्य प्रणाली एवं प्रशासन का ज्ञान।
(7) चिकित्सा प्रमाण–पत्र सम्बन्धी विभिन्न नियमों का ज्ञान।

आलोच्य ग्रन्थ—

(1) रोगी परिचर्या, श्रीकृष्ण औषधालय, कोलडा वोगला, अजमेर।
(2) नर्सिंग प्रोसीज्योर।
(3) प्राथमिक चिकित्सा–व्रण बन्ध—श्री शिवशर्मा।
(4) अगद तंत्र एवं व्यवहार आयुर्वेद—श्री युगल किशोर गुप्त।

तृतीय छठा प्रश्न–पत्र

रोग परिचय एवं चिकित्सा

1—व्याधि की परिभाषा, व्याधि के सामान्य कारण, व्याधि प्रकार, व्याधि अधिष्ठान, शारीरिक एवं मानसिक व्याधियां, अविकृत एवं विकृत शारीरिक वातादि दोषों के कार्य, उनके प्रकोप के कारण तथा प्रकुपितावस्था में उनके द्वारा उत्पन्न होने वाले रोगों की पृथक्–पृथक् संख्या।

2—निदान—शब्द का अर्थ, निदानादि पंचविध रोग विज्ञान, रोगी की स्पर्शन, दर्शन और प्रश्न द्वारा परीक्षा विधि, रोगी की नाड़ी, जिह्वा, शब्द, स्पर्श, आकृति, मल और मूत्र इन आठों की परीक्षा विधि, नाड़ी एवं श्वासगति की परीक्षा तथा अंकन थर्मामीटर एवं स्टेथिस्कोप द्वारा रोग की सामान्य परीक्षा विधि तथा चिकित्सालय में प्रयुक्त यंत्रोपयंत्रों की प्रयोग विधि, शोधन एवं संरक्षण।

3—चिकित्सा की परिभाषा, चिकित्सा के चार पाद तथा उनके लक्षण, चिकित्सा प्रकार, चिकित्सा के पूर्व चिकित्सक का कर्त्तव्य, चिकित्सक का रोगी के प्रति कर्त्तव्य, उपस्थाता के गुण एवं कार्य।

4—अनुपान की परिभाषा, अनुपान विधि, अनुपान की मात्रा, रोगानुसार विशेष अनुपान।

5—औषधि मात्रा विधि, शिशुभेषज परिमाप, औषधि सेवनकाल, भैषजमार्ग आदि।

6—स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरोचन, निरूहवस्ति, अनुवासन वस्ति, उत्तरवस्ति, अंजन, धूम्रपान, गण्डूस, आश्च्योतन, लंघन और बृहणादि का ज्ञान।

7—ज्वर, अतिसार, ग्रहणी, अर्श, अग्निमांद्य, विसूचिका, कामला, रक्तपित्त, राजयक्ष्मा, कास, हिक्का, श्वास, अरुचि, छर्दि, अनिद्रा, भ्रम, मूर्च्छा, अपस्मार, विदग्ध, वातव्याधि, आमवात, शूल, गुल्म, हृदय रोग, मूत्रकृच्छ, प्रमेह, शोध, पूयमेह, उपदंश, दद्रु, पामा, विस्फोट, प्लेग, मुखरोग, कर्णरोग, प्रतिश्याय, शिरोरोग, नेत्ररोग, प्रदर, सूतिका रोग, बालकों का कूकर कास एवं पसली के रोगों के सामान्य लक्षण तथा सामान्य चिकित्सा विधि, घरेलू उपचार एवं पथ्यापथ्य प्रकार।

8—जीवाणु एवं उनसे उत्पन्न रोगों का सामान्य परिचय, रोग क्षमता एवं उनको उत्पन्न करने के कृत्रिम साधन।

9—आयुर्वेदसम्मत चिकित्सा के सामान्य सिद्धान्तों का ज्ञान।

आलोच्य ग्रन्थ—

1—भाव प्रकाश (उत्तरार्द्ध),
2—शारंगधर संहिता,
3—चिकित्सा हस्तामलक—राजेश्वरदत्त शास्त्री।

यूनानी फार्मेसिस्ट डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष का

प्रथम प्रश्न–पत्र

तारीफे तिब्ब व हिफजाने सेहत

(1) उमूरे तबीया—

(1) तारीखे तिब्ब
(2) अरकान
(3) मिजाज
(4) अखलाक
(5) आजा
(6) अरवा
(7) कुवा
(8) आफाल
(9) फने तिब्ब की इब्तिदा और उसका तारुफ व तर्फ़ारा।

(2) सफाई या हिफजे सेहत (हाईजीन)—

(क) मोतअद्दी अमराज का फैलाव उनकी रोकथाम—छूत की बीमारियां, मोजामेअत (कापूलेशन), आतराक, गन्दला पानी व हवा के जरिए फैलने वाले वबाई अमराज और उनके फैलाने वाले जरासीम।

(ख) आबादी के मसाएल—दवासाज का खान्दानी बहबूदी प्रोग्राम में गोकाम अवाम को खान्दानी बहबूदी प्रोग्राम से आगाह करना और इसको अस्पतालों और दवासाजी का व दीगर मोकामात में इसको कामयाब बनाना।

(ग) खानदानी फलाह व बहबूदी प्रोग्राम के मुखतलिफ उसूल, मुखतलिफ किमियाबी अदविया, बजरिए दहने इस्तेमाल की जान वाली मुखतलिफ माने हमलियात व दीगर माने हमल तरीके।

(घ) माने हमल अशिया के इस्तेमाल के उसूल और उनकी हेफाजत उनके अकसाम व उनकी जांच के तरीके।

कुतुब—

(1) तिब्बी कुल्लियात—ह0 एहतशामुल कुरेशी।
(2) तहफ्फुजी व समाजी तिब्ब—ह0 अब्दुल मुबीन खां।

द्वितीय प्रश्न–पत्र

तशरीह मुनाफुल आजा (एनाटामी एण्ड फिजियालाजी)

1—जिस्म के लफ्जी माने और उसकी तफसीली तारीफ।
2—जिस्मानी तकसीम बलेहाजे आजा।
3—नसाएज (टीसू)।
4—जिस्मानी इकाइयों के अफआल या मोनाफेअ।
5—निजामें अज़म (स्कल्टन सिस्टम)।
6—निजामें मुआसिल (ज्वाइन्ट्स सिस्टम)।
7—निजामें दौराने खून (सर्क्यूलेटरी सिस्टम्स)।
8—निजामें अजलात (मस्कुल सिस्टम्स)।
9—दम व सतूवते लिम्फावी (ब्लड)।
10—हजम व खमीरात, गेजा व तगजिया (डाइजेशन, इंजाइम्स, एण्ड डाइजेशन जूसेशन आफ फड एण्ड न्यूट्रेशन)।
11—जिल्द (स्किन)।
12—निजामें तनफ्फुस (रिसपाइरेट्री सिस्टम्स)।
13—निजामें अखराज बोल (यूरिनरी सिस्टम्स)।
14—निजामें गुदूद गैर नाकला (डकटलेस ग्लैंड्स)।
15—निजामें आसाब व दिमाग (नर्व स सिस्टम एण्ड ब्रेन)।
16—आजाए हस्सासह (सेनसरी आर्गन्स)।
17—निजामें तौलीद व तनासुल (रिप्रोडक्टिव)।
18—इल्मुल विलादत व कबालत।
19—खून, सफरा, सौदा बलगम की जानकारी।

क्रियात्मक (प्रैक्टिकल)

1—खुर्दबीन के इस्तेमाल का तरीका ।

2—तशरीह व मोनाफे के ऐतबार से जिस्मानी आजा के खाके, मुखतलिफ आजा के माडल व सिलाइड्स का तआसफ व शेनाख्त ।

3—कुरियात दम का शुमार (काउंटिंग आफ) ।

इत्तेला (इन्फारमेशन)

तुलबा को तशरीह व मोनाफे की तालीम इस तरह दी जाय कि इनको एक-एक अजो व इसकी मोनाफे के मोताल्लिक अच्छी तरह मालूमात हो जाय व इन दोनों का बाहम खत भी जेहन नशीन हो जाये ।

कुतुब दाखिले नेसाब—

अंग्रेजी—एनाटोमी व फिजियालोजी फार नर्सेज ।
उर्दू—तशरीह कबीर ।
तशरीह शरीर—ह0 कबीरुद्दीन ।
मुनाफुल आजा—ह0 कबीरुद्दीन ।

तृतीय प्रश्न-पत्र

खवासे अदविया (फार्माकोलोजी) व शिनाख्ते अदविया

1—तारीफ दवा तथा उसके अवसाफ, निजाल, कुवा, अकताल व ख्वास बदल एदवा, मुजिर व मस्लेह और मिकदार खुराक वगैरह की इब्तेदाई मालूमात ।

2—(क) मुस्तलहात—द्रव्यगुण परिभाषा—लतीफ, कसीफ, तज्जि जामिद हुश, लोआबी. दोहनी अवकाल, मुनशिशफ, मुलत्तिफ, मुहल्लित जाली, मुखश्शिन मुकतेह, मुरखी, मुजफिप, कासीरे ए- रेयाह, मुते, जाजिब, मुसलेह, मानेब, उफूनत, मुकव्वी, हाजिम मुगल्लिज, मुगर्री, मुग्वित लहीम फादेजहर तिरयाक, मुदिर, तम्स, मुसम्मिन, मुनबिल, मुफज्जिर, हाबिस, कौल, मुफरेह, मुरत्तिब, कावी, मुजफिफ मुसदिद खातिम, मुबार्रिद, हाबिस, मुलैयन, मुसक्किम, मुआत्तिशा, मुकई, मुस्किर, मुखाद्दिद, मुदिद्र मिमुर्दिबौल, मुवही, मुसाहित, मल्लेह व बद्रका की तारीफ ।

(ख) मुस्तलेहात, मुतल्लिक नुस्खा—नुस्खा लिखने का ढंग । दर सुर्रवस्ता मुगवल, मुजव्वफ खराशीदा, मुकर्रज, आव मुरौवक की तफसील ।

3—(अ) वहमायन, त्रिफला, तोदरियैन, चार तुख्म, चार मग्ज, सन्दलेन, मुरौअकेन, फिल्फिलेन, काविलैन, मुखालियेन की पहचान और फायदे ।

(ब) इसके अलावा नीचे लिखे अदवियात के मुताल्लिक मामूली वाक्फियत ।

अदविया मुफर्रदा

नबाती–अदविया

आलूएबुखारा, इबलीलुल्मलिक, पालक, अफसन्तीन, अंजसत उशना, अतीस, बर्गे शबित परिसियावश, खुब्बानी, सालब मिसरी, गुलनार, अदवा जलापा, अवहल, असारुन, अजवाइन देशी असगंध, अस्तखूददश, अंजीर, जवाखार, हलवा, हब्बल आस, अनीसून, उश्ना, बुरादा आवनूस तुख्म खरबूजा गुलकन्द, हिल्तीत बेख जवर, उजुज वेख ईजखार, मगज, कद्दू, लहसुन, जौजबुआ, जावशीर, जवास, चोबचीनी, हब्बुस्सलातीन, हब्बुलकिल्त, पिल पिल दराज, कुस्त, कांवगज, धावा अफ्फूर, खरनूब, दहनज, रेहां, जंजबील, सुदाव, सरेशमाही समुन्दर फल, भंग, तूत, सुरजाल, तकमुनिया, सकबीनस, शुकाई, तुख्म, शलजम, काफूर, इनवुस्सलय, फरन्जमुशक, बोजीदान, बुन्दक सत बिहरोजा, गन्दा बिहरोजा, बीरा, करफस, गिलोय, गुलचांदनी, खार-खसक, पुम्बादाना, खशखाश, तुरन्तवीन, कासनी, तुख्माजर, चिरायता, अम्बा हल्दी, अलसी, उशूक, कूतंम काकड़सिंगी कायफल, कसूस, गुडहल, गलेगाफिस, करनफूल हिन्जल दालचीनी, दुकू, वादियान, जरावन तवील, जेरावन, मुदहरज, जाफरान, समुन्दर सोख, सिमाक, सेवती, शीरखिश्त, तुर्बुत, सातर उशवा, अदस, जुंगुर, उटगन, अजवायन, खुरसानी, जदिशक, ईरसा, इसफगो खिरमडण्डी, पान, पेखकासनी, बेलगिरी, पनवाड, तमरहिन्दी, तुर्मस, हातमी, तुदरियेन, जाज, दसवासा, चाक्सू, कबाब चीनी, कबाब खन्दा, कबीला, खरदक, हिना, दम्मुल्ल अखविन, खक्स्सूस, भिगन, जुफर, जैतून, सनाय, सेमल, शताबर, शकरतीगाल, शिब्त शहतरा, बुरादा शीशम, सेमगे अरबी, उसासबन्द, उन्नाव, लोबान, तुख्मवुरफा, बिसफाइज बालंग, वायबिडिंग, बागखवा, बाबूना, बनफसा, बुरये अरमनी, प्याज, बाकला, बादरंज, बोया, बिरंजासिफ निलादर, वेद अंजीर, विहदाना अनार, तुर्बुद, कोंस, वर्ग वाउजवां ।

हैवानी–अदविया

आपरेशन, अन्फेहा, खरातीन, सरेश म्याही, अम्बर, बीरबबूटी, जुन्द वेदस्तर, सर्तान, संगदानाए मुर्गा, मुश्क, शंख बारहसिंगा ।

मार्दनी अदबिया

उसरव, अबरूक, खुब्बुलहदीन, रसकपूर, जनरिख, संगवसरी, सुहागा, शोरा, तिला (सोना), याकत, तूतिया, हजरुल-यहद, लोहा, अल्मास (हीरा), इसमद जमूर, जमुर्रद, सफेदा, संगजराहत, सीमाब (पारा), गिल अरमनी, फीरोजा, लाजवर्द, शिलाजीत, गंधक जस्ता, बूरे अरमनी, इनकी मुख्तसर पहिचान और खवास व फवायद वगैरह का मामूली इल्म ।

4—अदविया के जमा करने और उनके तहफ्फुज व उसके मुताल्लिका अहकाम का इल्म, अदविया के पहचानने की तदबीर एक दवा के न होने पर दूसरी दवा के लेने औद की मिकदार खुराक के अहकाम वगैरह ।

5. **Western Therapy**—Knowledge of given medicines, used in Alopathic system :

Boric Acid.

Zinc Oxide.

Soda Bicarb.

Mercurio Chrome.

Acreflarim.

Yellow Petroleum.

K. mudy (Potassium permagnate).

Ressentiat Oil.

Olive Oil.

Castor Oil.

Asprin Tab.

Methylated Sprit.

Zinc Benzoin.

Quinine Sulph.

Antiseptic.

Chloroform and other anesthetic drugs.

Sulpha drugs and Antibiotics.

Tincture Iodine.

6—शिनाख्ते अदबिया की अहमियत एवं शिनाख्त की तरीकों की जानकारी ।

6. **Practical**—Physical properties, Chemical properties and Identification of abovementioned substances.

कुतुब

1—यूनानी द्रव्य गुण विज्ञान (हिन्दी) ।

2—किताबुल अदविया (उर्दू) ।

3—कुल्लियात अदविया (उर्दू) ।

4—मुअल्लेमुल अदबिया (हकीम मसीहुज्जमां) ।

5—वुस्तानुल मुफैदात ।

6—तालीमुल अदविया ।

7—मुकद्दमये इल्मुल अदविया—ह0 एहतशामुल हक कुरैशी ।

यूनानी फार्मेसी प्रशिक्षण पाठ्यक्रम द्वितीय वर्ष का

चतुर्थ प्रश्न—पत्र

इल्मुल सैदलिया व इल्मुल कीमियां

(फार्मेसी एण्ड डिस्पेंसिग)

1—इस्तेलाहात का इल्म, औजान और पैमाने, इनके अकसाम, कदीम तिब्बी, औजान व पैमाने का जदीद औजन व पैमाने से तवाजून ।

2—दवासाजी के आलात—करमधीक, भभका, पाताल जन्तर, खरल वगैरह का इस्तेमाल ।

3—सैदलिया कुल्लिया—दवासाजी और इब्तिदाई तक्सीम, दवासाजी की खुसिसियात, आमाल दवासाजी (क) मुख्तलिफ किस्म की अपचें, उनके इस्तेमाली नाम और अमली वजाहत, (ख) दवासाजी के मुफरद आमाल—दवायें कूटना, पीसना और छानना, सफूफ करना, खरल करना, तस्वील व गरल अदविया, तरबीक, तस्फिया, तक्सीर, तसईद, तदखीन व उसारा, रुब्ब बनाना, नूकू (खेसादा बनाना), तवीख (जोशांदा बनाना), इवला (नमक या खार बनाना), एहराक, वहमील तवलीग (कुश्ता बनाना और आंच की मुख्तलिफ इस्तलाहें, गिले हिकमत और कपरौटी, तख्मीर व तअफीन रोगन व तिला कशीद करना, पाताल जन्तर और दीगर जन्तरों की मुख्तलिफ किस्में, तेजाब सत, (ग) कियामी अदविया, किवाम, और उसके अहकाम, शर्बत, सिर्का जवीन, वउक, खमीरा, माजून, आनोशदारू व जवारिश, इस्तरीफल, लुबूब मुरब्बे, गुलकन्द, अव्वब बनाना लुब्दी बनाना, राबता और उसकी किस्में, गोली बांधना, वर्क चढ़ाना, शकर चढ़ाना आदि, कुर्स बनाना और उसके मुतअल्लिक उसूल व हिदायत लुआब और शीरा बनाना, और उसके हुब बनाना, (घ) अर्क व माउल्लहम खींचने का तरीका ।

4—मुखतलिफ अदबिया—सम्म, व सम्म मुतलका तथा [illegible] तरकीब तैयारी खुराक व फवायद और इस्तेमाल वगैरह का मुख्तसर इल्म, मादनियात व दीगर अदबिया का मुदब्बर करना ।

5—चन्द अग्जिया की तैयारी—दाल का पानी, दलिया, साबूदाना, शूरवा, फालूदा, फिरीनी माउल, जुब्न, माउश्शईर, माउल, अस्ल, यखनी ।

6—(क) लोशन बनाना, मुखतलिफ अदबिया के लोशन बनाना, आंख का लोशन वगैरह ।

(ख) प्लास्टर—प्लास्टर बनाने की तरकीब । पेरिस प्लास्टर के बनाने तथा काटने की तरकीब ।

(ग) हफ्फपूजन तथा हमरसन बनाने की तरकीब, अफलातूनी रोटी ।

7—सैदेलिया जुजइया—अत्तार के फरायज, दवाखाने का आरास्ता करना, दवाखाने में दवाइयों की तरकीब, अन्तरखाने के आलात, नुस्खा बांधना, अदबिया की नाप तौल, इस्तेहलात मुत्तअल्लिक दावासाजी ।

8—रजिस्टर—रजिस्टरों का भरना और उनको महफूज रखना, मामूली मतब अदबिया (मुफरदा व मुरक्कबा) की फेहरिस्त (इण्डेण्ट) बनाना, मकायी अदबिया के जमा करने की तरकीब ।

कुतुब

1—मुअल्लेमुल अदबिया हिस्सा—2 (हकीम मसीहुज्जमा) ।

2—देहली का दवाखाना (हकीम कबीरउद्दीन) ।

3—किताबुल मुरक्कबात (ह0 सैय्यद जिल्लुर्रहमान) ।

द्वितीय पंचम प्रश्न—पत्र

तीमारदारी, तिब्बे कानून व इल्मोसमूम

तीमारदारी—

1—तीमारदारी के औसाफ और फरायज, तीमारदार का अखलाक व सुलूक और उसका लिबास, मरीज और मरीज के खानदान वालों के साथ उसके ताल्लुकात ।

2—शिफाखाना और उसमें इस्तेमाल होने वाली हर एक अशिया की ततहीर, तादिया का तदारुक ।

3—मरीज के कमरे (वार्ड) में नये मरीजों की भर्ती के कवायद व जवाबित । मरीजों से मुलाकात करने के लिये मरीज के कमरे में दाखिल होने के कवायद व जवाबित ।

4—मरीज के जिस्म की सफाई, कमजोर मरीजों का बिस्तरे पर ही गुस्ल, बौल व बराज के जुरूफ का इस्तेमाल, मरीज के आराम और नींद का इंतजाम ।

5—बिस्तर तैयार करना—मुख्तलिफ अकसाम के बिस्तरे ।

6—जख्म बिस्तरी—जख्म बिस्तरी के असबाब, उनका तदारुक और इलाज ।

7—मरीज का नाप–तौल—मरीज के जिस्म की हरारत को नापना, नब्ज व फेफड़े तनफ्फुस का इम्तिहान करना ।

8—नुस्खे में मुस्तमिल इशारों को इल्म, मरीज के कैफियत के कागज को भरना, मरीज के बारे में रिपोर्ट तहरीर करना, मरीज के जिस्म की हरारत, नब्ज, तनफ्फुस, बौल बराज, बलगम के जिल्द और नफिसयाती कैफियात, कैफियात हर्कत आदि का मुसाहिदा करके रिपोर्ट तैयार करना ।

9—बौल व बराज व बुजाक (थूक) को इम्तिहान के लिये भेजने का तरीका ।

10—नाक वगैरह दीगर मसालिक (राहों) से मरीज को तग्जिया पंहुचाना ।

11—मुखतलिफ हुक्नों के अहकाम, मसाना में कअद वगैरह सभी मसालिक-ए-फुनलात का गुस्ल व सफाई, डूस और कैथीटर का इस्तेमाल ।

12—इन्किबाब (गुस्ल बोखारी), तकमीद व सेंक और पुल्टिस, गरम पानी की बोतल, मुख्तलिफ अकसाम की पुल्टिसें । वारिद पट्टियों और पुल्टियों का इस्तेमाल ।

13—हरारते जिस्म को कम करने के लिये तदबीर व तवरीद । मकअद अदविया का तहफ्फुज अदविया का मुसाहिदा ।

14—इस्तेमाल अदविया—खारिजी इस्तेमाल बजरिये मुंह तनफ्फुस और मकअद अदविया का तहफ्फुज, इन्किबाब इसालए–अलक हजामत, तमरीख वगैरह ।

15—मुतालिक वर्म तदाबीर—पुल्टिस, सूखा गरम सेंक (तकमीद), इन्किबाब इसालए–अलक हजामत, तमरीख वगैरह । वर्म कसर (इन्किसारुलअज्म), खलअ वगैरह में ।

16—दल्क की तरकीब और अहकाम, मजरूह पर दल्क के जरिये एलाज, मसलन दीगर मरजी हालात में दल्क और रियाजतवर्जिश वगैरह के जरिये एलाज ।

17—बदरका और अग्जियातुल्मर्जा के अहकाम, साबूदाना, माउश्शईर (जौ का पानी) अलसी की चाय तुलसी व अदरक की चाय, सिकंजबीन, दाल का पानी, चूने का पानी, चावल का मांड वगैरह की तरकीब तैयारी मरीज के जरूफ मरीज की गिजा की संभाल ।

18—अकसाम अमराज के लिहाज के अकसाम तीमारदारी की तफसील ।

19—मरीज के मौत की इम्कानात में तीमारदार के फरायज वावे मौत मइयत का इंतजाम ।

(2) तिब्ब कानूनी—हैवानी जहर नबाती जहर एवं मादनी जहरों (Poisonous and dangerous drugs) के मुताल्लिक कानूनी जानकारी ।

(3) इब्तदाई इलाज व मोआलि-ए-कर्हा के फरायज (फर्स्टऐड)

(1) आलाते जर्राही (सामने इलाज) मरहिम और बन्दिश के पाकीजा सामान (रुई असावात तथा चिमटी नस्तर) भूसा (उस्तरा) वगैरह आलात व सामाने जर्राही और तअसीव (पट्टी बांधना) वगैरह का इल्म कए (दागना) कए विग्रार हजामत इसाल अल्क वगैरह का मामूली इल्म ।

(2) इब्तिदाई तदाबीर—इत्तिफाकी सदमात और उनका इलाज कर्हा-ए-जरबी का इब्तिदाई इलाज कुचल जाने और कुचले मुकाम के नीला पड़ जाने की वजह खून रोकने की तदबीर नाक मुंह वगैरह से निकले हुए खून के रोकने की तदबीर हरकुनार शुआउ-शम्सी से जमने या बर्फ से गलने या सर्दी से ठिठुर जाने गर्मी या दिमाग में गर्मी चढ़ जाने पानी में डूबने कस खला दम घुटने सांस जारी करने वगैरह की इब्तिदाई तदाबीर और जख्मी को स्ट्रेचर में रख शिफाखाने तक ले जाने की तरकीब का इल्म इत्तिफाकी हादेसात के मुताल्लिक तैयारी का इल्म ।

(3) एलाज समूम (इल्मुस्समूम)—अक्साम सुमूम सुमूम के असरात में तगईयूर पैदा करने वाला असबाब मुख्तलिफ आजा जिस्मानी पर सम्मीयात के असरात अलामात एसम्मी हर सम्यकी अलामात मख्सूसा तश्खीम सम्म के उसूल मुख्तलिफ सम्मीयात की मुख्तलिफ खुराक मुद्दत हलाकत मस्मूम का इब्तिदाई इलाज सांप बिच्छू कनखजूरा शहद की मक्खी मच्छर बर्रे पागल कुत्ते विषखोपरा वगैरह के जहर का ब्यान और इब्तिदाई तदाबीर जहरों के जमा व तकसीम करने की एहतियात कोकीन अफयूम और शराब के बारे में सरकारी कवायद व जवाबित ।

(4) मोआलिजे-ए-कर्हा या तीमारदार कर्हा के फरायज—पाक व साफ यानी मुतऊहर जराहियात (Aseptic Surgery) के उसूल जरासीम की किस्म जिस्म के अंदर गरज पैदा करने वाले जरासीम का तरीका दाखला जरासीम के मार डालने की तदबीर उबालना बोखारात पहुंचाना वगैरह ततहीर व ताकीम ।

अमल जर्राही—(क) कमरे जर्राही का इंतजाम देख व रेख अमलियात का इब्तिदाई इंतजाम यानी तैयारियां मरीज को अमलियात के लिये तैयार करना ।

(ख) शिफाखाने के और सामान व उनके नाम और इस्तेमाल बतहरीर व ताकीम तअसीव (पट्टियां) का तैयार करना ।

(ग) जर्राही के आलात उनके नाम और उनको साफ-साफ और उनको महफूज रखने का तरीका ।

अमल-जर्राही

अमली जर्राह के कब्ल हाथों की ततहीर नाखून की ततहीर रब के दास्तानों का इस्तेमाल मरीज की जिल्द और आलाते जर्राही की ततहीर व ताकीम अलावा सुईयों की ततहीर ।

(घ) मरीज को अमलियात के लिये तैयार करना अमलियात के बाद की तदाबीर और उसके अवारिज को इलाज सदमा इन्तिहात (कोलेप्स) का इलाज जिरयाने खून और उसका इलाज ।

(ङ) तअसीव व असावा (बैन्डेज) जिस्म के मुख्तलिफ आजा मखसूस हिस्सों के लिये खास तअसीव (बैण्डेजेज) ।

(च) जर्वान-ए-इजाम—इन्फिसराते इजाम व इसके मुख्तलिफ अक्साम अलामात सादाव मुरक्का कुसुर का इलाज व तदाबीर, खल मफसल और उनका इलाज, मोंच ।

(छ) मुखद्दिर अदविया का उमूमी इल्म और इस्तेमाल, मुस्तअमिल मुखद्दिर अदविया, तखदीर के हालात तखदीर के खतरे और उनकी एहतियाती तदाबीर तखदीर के बाद मरीज की देखभाल क्लोरोफार्म और ईथर का तरीक-ए-इस्तेमाल ।

(ज) जख्म जराहत और मामूली जवा की अमली ततहीर तअसीव ड्रेसिंग ।

(4) अस्पताल और आप्रेशन के मुताल्लिक (Professional Ethics and Hospital Management) ।

1—कम्पाउण्डर्स और उसके फरायज और पेशेवाराना जिम्मेदारी अस्पताल के मर्जा को नर्स और अवाम से राब्ता कायम रखने की जिम्मेदारियां व फरायज के मुताल्लिक पूरा इल्म ।

2—दवाइयों और सम्म के मुताल्लिक सरकारी कवायद व कानून के बारे में पूरी जिम्मेदारी ।

3—यूनानी तिब्ब के मुताल्लिक कम्पाउण्डर के फरायज ।

4—खानदानी मनसूबा बन्दी और उसके मुताल्लिक खास-खास तरीकों की जानकारी और कम्पाउण्डर की मददगारी हैसियत ।

5—नुस्खों की तरकीबों और उसकी दवाइयों को समझना और नुस्खे के मुताल्लिक दवाइयां तैयार करके तकसीम करने का उसूल और तरीका ।

6—अस्पताल आपरेशन रूम फारमेसी की पूरी जानकारी और उसके मुताल्लिक सबों को कामों की देखरेख का इल्म और इनके प्रबंध के बारे में पूरी जानकारी ।

7—मेडिकल सार्टीफिकेट के तैयार करने के तरीकों के बारे में कानूनी तरीकों पर नियमों की जानकारी ।

कुतुब—

1—नर्सिंग प्रोसीजर ।

2—मकजरूल हिकमत–ह0 गुलाम जिल्लानी ।

3—तीमारदारी व घरेलू इलाज—ह0 उमुल फजल ।

4—इल्मे समूम—ह0 हम्माद उस्मानी ।

5—तिब्बे कानूनी—ह0 हम्माद उस्मानी ।

छठा प्रश्न—पत्र

तशखीस व इलाज

1—मर्ज की तारीफ मर्ज के आम असबाब मर्ज के मुकाम व अक्साम जिस्मानी व नफसानी अमराज के माद्दे तबई व गैर तबई बदनी अख्लात वगैरह माद्दों के अफजाल उनके असबाब व उनके जरिये पैदा होने वाले अमराज की अलग-अलग तादाद अमराज चेहारगान ।

2—तशखीस लुग्वी माने इस्तिराकाउल मरीज और उसके अक्साम इस्तिफ–साराल व जिस्मानी उनके अक्साम व इम्तिहान बिलजस्स का तारीका नब्ज जबान (जायका) आवाज वगैरह । हवास–ए–खम्सा सूरत व सहना बोल व बरोजे वगैरह के इम्तिहान का तरीका । बलगम व खून के तरीक–ए–इम्तिहान और मिक्यासुल हरारत व मिस्ताउस्सर के जरिये इम्तिहान अमराज का मामूली इल्म ।

3—तरीक–ए–एलाज एलाज के अक्साम एलाज से कब्ल मोआलिज के फरायज मरीज के मुतल्लिक मोआलिज के फरायज ।

4—बदरका की तारीफ बदरका के अहकाम बदरका की मिकदार खूराक मुख्तलिफ अदविया के बदरकात ।

5—अदविया की मिकदार खूराक के अहकाम मिकदार खूराक बराय अतफाल औकात इस्तेमाल दवा ।

6—तरतीब तकमीद कऐ मुस्त्रहिल हुक्ना कोहल गरगरा नजमजा कुतूर बुखूर शुमूम लखलखा आदि का इल्म ।

7—हुम्मा इसहाल बवासीर जोफेहजम हैजा यरकान तपेदिक व सिल खांसी हिचकी रिब्व (दमा) कै सहर सिद्र व दुवार गशी मिर्गी कब्ज अमराज आसाब व दिमाग वजउलमफासिल क्लंज वावगोला अमराज कल्ब अमराज–ए–मसाना औराम, बवासीर, सूजाक आतशक, कूबा, सुर्खबादा, ताऊन, अमराजुल्फम, अमरा, जुल्फम, जुकाम, अमराजुर्रास, अमराजुएन, अमराजेअनफ अन्फ हुम्मा नफासिया (प्रसूत) बच्चों की काली खांसी और पसली के अमराज के अलामात, आम अलामात–ए–मुन्जिर और आम अरीकए एलाज व गिजा और परहेज वगैरह का मामूली इल्म ।

8—इलाज के वसूलों की जानकारी ।

कुतुब—

1—शरह असबाब (तर्जुमाए कबीर)

2—रहनुमाये तशखीस—ह0 एहतशामुलहक कुरैशी ।

CONDITIONS TO BE FULFILLED BY THE INSTITUTIONS IMPARTING TRAINING FOR DIPLOMA COURSE IN PHARMACY (AYURVEDIC/UNANI).

Any authority/institution applying for permission to impart above training to Board of Indian Medicine, U. P., Lucknow for approval of courses of study for diploma in Pharmacy (Ayurvedic/Unani) shall provide :

A. Accommodation.—(A) It should be adequate own building. (B) Adequate with proper ventilation, light and other hygienic conditions.

(a) *General*—

1. Head of the Institution's Room, Staff room and Office.
2. Library, Reading Room (together or in different rooms).
3. Museums and Laboratories (Dravyaguna, Ras Shastra and Sharir).
4. Student's Common Room.
5. Class Rooms—2 with a capacity of accommodating 50 students in each.

(b) *Laboratories*—

For the maximum efficiency laboratories should be separate and well equipped. Three separate laboratories of Dravyaguna, Ras Shastra and Sharir are essential to run the course efficiently.

(c) *Hospital*—

A hospital with a surgical and medical outdoor and an indoor of at least one occupied bed per four students admitted to the training is required. The hospital will be run existing by the teaching staff of the college. Principal will act as the Superintendent of the Hospital in addition to his own duties. Senior teacher will be M. O. Incharge in addition to his own duties.